संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

धियो यो नः प्रचोदयात्
डी.ए.वी. पी.जी. कालेज, वाराणसी

अप्प दीपो भव

Adi Drishya: A Primeval Vision of Man

चंदौली जनपद (उत्तर प्रदेश) के शैलचित्रों का बहुविषयक सर्वेक्षण एवं अभिलेखन

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र

नई दिल्ली

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

डी० ए० वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय

वाराणसी

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

वसंत महिला महाविद्यालय

राजघाट, वाराणसी

कला, मानव मस्तिष्क की चेतना के माध्यम से उपजे भावों व विचारों को मूर्त रूप में अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन है। मानव जीवन की उत्पत्ति के क्रम में यह किसी न किसी रूप में उसके साथ जुड़ा रहा है। यद्यपि इस विकास के प्रारंभिक क्रम में यह अमूर्त रूप में रहा किन्तु उत्तरोत्तर समय में यह शैलकला के रूप में मूर्त रूप में प्रस्तुत हुई जो क्रमशः पाषाण उपकरण, शैलाश्रयों–शैलगुहाओं एवं चित्रकला के रूप में दिखाई पड़ती है। इनमें शैल चित्रकला ऐसे प्रथम प्रमाण हैं जो पूर्णतः मानवकृत तथा मानव जीवन के विविध क्रियाकलापों का वस्तुनिष्ठता के साथ प्रस्तुतीकरण करते हैं, इस आधार पर **शैल चित्रकला समस्त मूर्त कलाओं की जननी** है।

कला की इसी धरोहर को अध्ययन करने एवं भविष्य की संततियों के लिए संरक्षित करने हेतु इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग द्वारा निरंतर देश के विभिन्न राज्यों में शैलकला सर्वेक्षण एवं अभिलेखन का कार्य किया जा रहा है। विभाग के द्वारा अभी तक देश के 19 राज्यों में इस प्रकार का अध्ययन किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश का दक्षिण–पूर्व क्षेत्र का अधिकांश भाग विंध्य व कैमूर पर्वत श्रृंखलाओं के अंतर्गत आता है जिसमें चंदौली, सोनभद्र एवं मिर्जापुर जिले सम्मिलित हैं। विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश में पूर्व में 2 चरणों में, वर्ष 2015 एवं 2018 में, अभिलेखन कार्य प्रारंभ किया गया जो क्रमशः मिर्जापुर एवं सोनभद्र के क्षेत्रों में किया गया एवं वर्तमान में भी जारी है। इसी क्रम में चन्दौली जनपद के शैलचित्रों का भी अभिलेखन का कार्य आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डी0 ए0 वी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय व वसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट वाराणसी के संयुक्त तत्त्वाधान में **दिनांक 12–23 सितम्बर, 2022 के मध्य** किया गया।

परियोजना का कार्य चरणबद्ध तरीके से किया गया जिसमें सर्वप्रथम परियोजना के समझौता ज्ञापन पर तीनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षर किये गए। परियोजना के तहत क्रमशः 6 प्रकार के कार्यक्रम/शोधाध्ययन संपन्न हुए–

1. शैलकला अभिलेखन अभिविन्यास कार्यशाला
2. भारतीय शैलकला पर विशिष्ट व्याख्यान (ग्लिम्पसेस ऑफ इण्डियन रॉक आर्ट)
3. सर्वेक्षण एवं अभिलेखन
4. नृजातीय अध्ययन
5. जागरूकता कार्यक्रम
6. चित्रकला प्रदर्शनी

शैलकला अभिलेखन अभिविन्यास कार्यशाला

12 सितम्बर, 2022

परियोजना के तहत शैलकला सर्वेक्षण एवं अभिलेखन हेतु एक बहुविषयक स्थानीय/सम्बंधित अध्ययन क्षेत्र के विद्वतजन (पुरातत्त्वेत्ता, शैलकला विशेषज्ञ, भू–विज्ञानशास्त्री, मानवशास्त्री आदि) की टीम का गठन किया गया जिससे शैलकला के विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक अध्ययन किया जा सके। 12 सितम्बर, 2022 को परियोजना का प्रथम चरण अभिविन्यास कार्यशाला का आयोजन तीनों संस्थाओं के सहयोग से डी0ए0वी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सेमिनार हाल में हुआ। कार्यशाला के मुख्य वक्ता प्रो0 सोनवणे (रिटायर्ड प्रोफ़ेसर, पुरातत्त्व विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा, गुजरात) रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो0 सत्यदेव सिंह (प्राचार्य, डी0ए0वी0 पी0 जी0 कालेज) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के आधार वक्ता डॉ0 रमाकर पंत (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य विभाग) रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 ओमप्रकाश (असिस्टेंट प्रोफसर, प्रा0 भा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग, डी0ए0वी0 पी0 जी0 कालेज) द्वारा किया गया।

डॉ0 रमाकर पंत द्वारा आधार वक्तव्य

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं मंगलाचरण से हुआ। सर्वप्रथम कार्यशाला का स्वागत उद्‌बोधन डॉ0 मुकेश कुमार (विभागाध्यक्ष, डी0ए0वी0 पी0 जी0 कालेज) द्वारा किया गया। डॉ0 ओमप्रकाश ने चंदौली जनपद के पुरातात्त्विक महत्त्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। तत्पश्चात अभिविन्यास कार्यक्रम का आधार व्याख्यान डॉ0 पंत द्वारा प्रस्तुत किया गया। डॉ0 पंत ने आदि दृश्य विभाग द्वारा शैलकला के क्षेत्र में अभी तक किये गए कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया, साथ ही चन्दौली जनपद के शैलचित्र कला अभिलेखन परियोजना के प्रमुख उद्देश्यों यथा सर्वेक्षण, अभिलेखन, संरक्षण आदि की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता प्रो0 सोनवणे

मुख्य वक्ता प्रो0 सोनवणे ने टीम को सर्वेक्षण एवं अभिलेखन के लिए क्या आवश्यक है और कैसे, इसका परिचय दिया। विषय क्षेत्र का पारिस्थितकीय तंत्र, शैलकला पुरास्थल की स्थिति व स्वरूप, शैलांकन तकनीक, विषयांकन, कालानुक्रम, वर्तमान जीवंत पद्धति में इस कला की निरंतरता आदि का अध्ययन का स्वरूप कैसा हो इसके बारे में टीम के सदस्यों को अवगत

कराया। इसके साथ ही स्थानीय आम–जनमानस के मध्य संबंधित जागरूकता हेतु किये जाने वाले प्रयासों के सन्दर्भ में भी संक्षिप्त परिचय प्रदान किया।

कार्यक्रम में टीम सदस्यों के अतिरिक्त बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं विभिन्न कालेजों के अध्यापक, शोधछात्र, विद्यार्थी आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मंचासीन अतिथिगण बांए से दांए क्रमशः डॉ0 मनीषा सिंह, डॉ0 दिलीप कुमार सन्त, डॉ0 ओमप्रकाश, प्रो0 वी0 एच0 सोनवणे, डॉ0 रमाकर पंत, डॉ0 मुकेश कुमार व प्रो0 प्रशांत कश्यप

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापक, शोधछात्र व विद्यार्थी

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर डॉ0 पंत एवं प्रो0 सत्यदेव सिंह, साथ में डॉ0 ओमप्रकाश (बांए)

(विशिष्ट व्याख्यान)
ग्लिम्पसेस ऑफ इण्डियन रॉक आर्ट
13 सितम्बर, 2022

परियोजना के तहत द्वितीय कार्यक्रम भारत की शैलकला विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन 13 सितम्बर, 2022 को वसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट में तीनों संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वाधान में किया गया। कार्यक्रम के व्याख्यानकर्ता प्रो0 सोनवणे रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्रो0 अलका सिंह (प्राचार्या, वसंत महिला कालेज, राजघाट) रहीं। आधार वक्तव्य डॉ0 रमाकर पंत द्वारा प्रस्तुत किया गया। संचालन का कार्यभार डॉ0 संवेदना सिंह (असिस्टेंट प्रोफसर, प्रा0 भा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग, वसंत महिला कालेज) द्वारा निभाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ देव वंदन से हुआ।

डॉ0 पंत ने भारतीय शैलकला का संक्षिप्त परिचय देते हुए आदि दृश्य विभाग द्वारा शैलकला पर किए जा रहे वृहद् कार्यों, जैसे– अभिलेखन, राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय सेमिनार व प्रदर्शनी, कार्यशाला तथा शैलकला पर किए गए प्रकाशन आदि, के विषय में चर्चा की। साथ ही, विश्वविद्यालय एवं विभिन्न कालेजों से आए हुए प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के प्राध्यापकों से शैलकला विषय के अध्ययन दायरे को बढ़ाने का भी अनुरोध किया, जिससे लगभग 15–20 हजार साल प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रमाणों एवं उसके व्याख्यात्मक पक्षों को अधिकांश लोगों तक पहुँचाया जा सके।

देव वंदन प्रस्तुति

डॉ0 रमाकर पंत द्वारा आधार वक्तव्य

प्रो0 सोनवणे ने भारत की शैलकला पर विस्तृत रूप से व्याख्यात्मक परिचय दिया। शैलकला अध्ययन एवं पारिस्थितकीय तंत्र के आधार पर भारत को 6 प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है– उत्तरी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, पूर्वोत्तर क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र एवं दक्षिण क्षेत्र। प्रो0 सोनवणे ने इन सभी क्षेत्रों के शैलकला के चित्रांकन तकनीक, विषयवस्तु, प्रागैतिहासिक पर्यावरणीय स्थिति (पाटने, महाराष्ट्र से उच्चपुरापाषाणकाल कालीन शुतुरमुर्ग के अण्डों के शेल पर अलंकरण) एवं विशेषताओं आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला। भारतीय सन्दर्भ में शैलकला के प्रमाण उच्चपुरापाषाणकाल (चंद्रावती कोर, गुजरात;

लाखाजुआर, मध्यप्रदेश) से लेकर ऐतिहासिक काल तक के हैं। साथ ही, यह बहुमूल्य धरोहर प्राकृतिक अथवा मानवीय कारकों से किस प्रकार से नष्ट हो रही है और इसे कैसे बचाया जा सकता है इसके विषय में भी बताया।

प्रो0 अलका सिंह ने अध्यक्षीय उदबोधन में आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के विभागाध्यक्ष डॉ0 पंत एवं केंद्र को इस शैलकला परियोजना के क्रियान्वयन हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही, सहयोगी संस्था डी0ए0वी0 पी0 जी0 कालेज को भी धन्यवाद किया। प्रो0 सिंह ने भविष्य में इस प्रकार के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों में यथासंभव सयोगात्मक संस्था के रूप में वसंत महिला महाविद्यालय की उपस्थिति हेतु इच्छा भी जाहिर की।

व्याख्यानकर्ता प्रो0 सोनवणे

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए डॉ0 पंत एवं प्रो0 अलका सिंह, साथ में डॉ0 सुशीला भारती

कार्यक्रम में टीम सदस्यों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय एवं विभिन्न कालेजों के अध्यापक, शोधछात्र, विद्यार्थी आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 संवेदना सिंह द्वारा किया गया। अंततः डॉ0 राजीव जायसवाल (असिस्टेंट प्रोफसर, प्रा0 भा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय) ने सभी आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ0 संवेदना सिंह व डॉ0 राजीव जायसवाल

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापक, शोधछात्र, विद्यार्थी

शैलकला सर्वेक्षण एवं अभिलेखन

14–22 सितम्बर, 2022

चन्दौली जनपद 'विन्ध्य गांगेय क्षेत्र का संक्रान्तिक स्थल (Transitional zone) है। इस जनपद की भूतात्विक संरचना बलुआ प्रस्तर के परतदार जमावों से मिर्जापुर के पठार एवं प्रतिनूतन कालीन अवसादी जमावों से चकिया–चुनार के मैदान के रुप में हुई हैं। '**प्रतिनूतन काल**' विषम जलवायु चक्रों की समाप्ति, मानव उद्विकास एवं पुराप्रस्तर कालीन सांस्कृतिक चरण प्रारम्भ के लिए एवं '**नूतन काल**' पर्यावरणीय अनुकूलन व आज के जलवायु परिवेश के साथ मध्यपाषाण काल एवं कालान्तर सांस्कृतिक विकास के लिये जाना जाता है। चन्दौली जनपद विन्ध्यांचल पठार के पूर्वी अंचल 'कैमूर श्रृंखला' का अंग है जिसके समीपवर्ती क्षेत्र में उपकरण गढ़न के लिए अर्ध–बहुमूल्यवान प्रस्तर खण्डों की उपलब्धता, शिकार एवं खाद्य संग्राहक अर्थव्यवस्था के लिए जंगलों व घाटियों में बने उपयुक्त परिवेश तथा मानव आश्रय के लिए प्रकृति प्रदत्त गृह 'शैलाश्रयों' (Shelters) का होना, विन्ध्य क्षेत्र के इस अंचल में मानव को प्रागैतिहासिक काल से ही आकर्षित करता रहा है। ये शैलाश्रय आदिम जन समूहों को वर्षा, धूप, ठण्ड एवं जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए उपयुक्त थे। अतः आदिम मानव ने इन शैलाश्रयों को अपना आश्रय स्थल बनाया। इन शैलाश्रयों में मानव के सांस्कृतिक साक्ष्यों के साथ शैल चित्रकारी भी प्राप्त होती है। शैल चित्रकारी में आखेट दृश्य, कलात्मक रूचि, काल्पनिकता–टोने टोटके एवं सामाजिक जीवन के पक्षों को बखूबी संजोया गया है। शैल चित्रकारी का सूक्ष्म अध्ययन आदि मानव को सांस्कृतिक मानव होने का साक्ष्य प्रस्तुत करता है जिसमें आदिम जन समूहों के सम्पूर्ण पक्षों की झाँकी प्राप्त होती है।

इन्हीं समस्त पक्षों पर टीम द्वारा सर्वेक्षण, अभिलेखन एवं अध्ययन का कार्य किया गया। टीम सदस्य के रूप में डॉ0 रमाकर पंत (मानवशास्त्री व विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य, इं0 गाँ0 रा0 क0 कें0), प्रो0 यू0 के0 शुक्ला (भूवैज्ञानिक, भू–विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय), डॉ0 दिलीप कुमार संत (परियोजना कोऑर्डिनेटर व असिस्टेंट प्रोफेसर, आदि दृश्य, इं0 गाँ0 रा0 क0 कें0), डॉ0 ओमप्रकाश (शैलकलाविद् व लोकल फील्ड कोऑर्डिनेटर), डॉ0 राजीव जायसवाल

टीम सदस्य बांए से दांए क्रमशः डॉ0 राजीव जायसवाल, श्री निखिल प्रजापति, डॉ0 ओमप्रकाश, डॉ0 रमाकर पंत, प्रो0 यू0 के0 शुक्ला, श्री गौतम विश्वकर्मा, डॉ0 मुकेश कुमार व डॉ0 दिलीप कुमार संत

(पुरातत्त्ववेत्ता एवं लोकल फील्ड कोऑर्डिनेटर) एवं श्री प्रवीण सी0 के0 (प्रोजेक्ट असोसिएट, आदि दृश्य, इं0 गाँ0 रा0 क0 कें0) सम्मिलित रहे।

अध्ययन के दौरान पूर्व प्रतिवेदित 6 शैलकला पुरास्थलों का अभिलेखन किया गया एवं 4 नए शैलकला पुरास्थलों की खोज एवं अभिलेखन किया गया, जिसका विवरण नीचे तालिका में है–

पूर्व प्रतिवेदित शैलकला पुरास्थल

क्रम	शैलकला पुरास्थल	अंकन प्रकार	रंग	अध्यारोपण	विषयांकन	कालावधि	वर्तमान स्थिति
1.	घुरहूपुर	चित्रण	गेरूआ, काला, चाकलेट	√	हस्तछाप, मानव–पशु आकृति, तथागत बुद्ध, कलशाकार स्तूप व कुषाण कालीन ब्राह्मी अभिलेख	ऐतिहासिक कालीन	लगभग समाप्त होने की स्थिति
3.	रतनपुर	चित्रण	गेरूआ, काला, गहरा भूरा व चाकलेट	√	मानव, पशु–पक्षी आकृति, ज्यामितीय आकृति, नृत्य दृश्य, सकेन्द्रित वृत्त, नर्तकी (स्थानीय किवदंतियों के अनुसार चन्द्रकान्ता से संबंधित) प्रागैतिहासिक कालीन झोपड़ी के स्तम्भ गर्त (Post Holes)	प्रागैतिहासिक से ऐतिहासिक कालीन	सुरक्षित किन्तु वातावरण का प्रभाव
4.	खरौली	चित्रण	गेरूआ व चाकलेट	√	मानव, पशु–पक्षी आकृति	प्रागैतिहासिक से ऐतिहासिक कालीन	सुरक्षित किन्तु मानवीय कारकों से प्रभाव
5.	तेनुई	चित्रण	गेरूआ व चाकलेट	√	हिरण आखेट दृश्य, कतारबद्ध नृत्य दृश्य, कूबड़दार बैल, मोर, प्रागैतिहासिक कालीन मातृत्व दृश्य आदि	प्रागैतिहासिक कालीन	सुरक्षित
6.	ताला	चित्रण	चाकलेट	×	'X' आकार मानवाकृति, नृत्य दृश्य, ढोल वादक व मैथुन दृश्य	आद्यैतिहासिक कालीन	सुरक्षित
7.	कौड़िहार	चित्रण	गेरूआ व चाकलेट	√	एक्सरे टाइप पशु आकृति, कतारबद्ध पशु, आखेट दृश्य, मुकुटधारी मानवाकृति, ज्यामितीय आकृति, निगेटिव हस्तछाप, जीवाश्म आदि	प्रागैतिहासिक कालीन **जीवाश्म (प्री–कैम्ब्रियन)**	सुरक्षित

नव–सर्वेक्षित शैलकला पुरास्थल

क्रम	शैलकला पुरास्थल	अंकन प्रकार	रंग	अध्यारोपण	विषयांकन	कालावधि	वर्तमान स्थिति
2.	घुरहूपुर नई पहाड़ी	चित्रण	चाकलेट	×	मानव व पशु आकृति	प्रागैतिहासिक कालीन	सुरक्षित किन्तु पर्यावरण का प्रभाव
8.	धन्नीपुर	चित्रण	गेरूआ	×	मातृत्व दृश्य व ज्यामितीय आकृति	प्रागैतिहासिक कालीन	सुरक्षित किन्तु पर्यावरण का प्रभाव
9.	भटवारा खुर्द	चित्रण	लाल व गेरूआ	√	अश्वारोही, गजारोही, युद्ध दृश्य, अश्व, ज्यामितीय आकृति, आयताकार आकृतियाँ, सकेन्द्रित वृत्त आदि	ऐतिहासिक कालीन	मानवीय एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभातिव
10.	दुल्हई देई (हाजीपुर)	चित्रण/ उत्त्कीर्णन	लाल व गेरूआ	√	अश्वारोही, गजारोही, राजकीय यात्रा दृश्य, ज्यामितीय आकृति। सकेन्द्रित वृत्त/मयूर व मानवाकृति (उत्त्कीर्णन)	ऐतिहासिक कालीन	सुरक्षित किन्तु पर्यावरण का प्रभाव

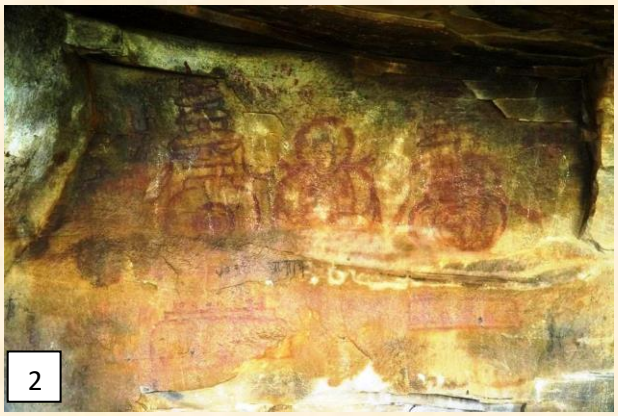

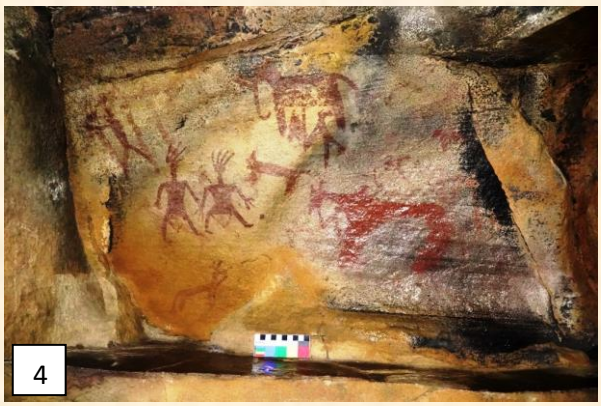

क्रमशः 1व 2. (घुरहूपुर), 3. रतनपुर, 4. खरौली

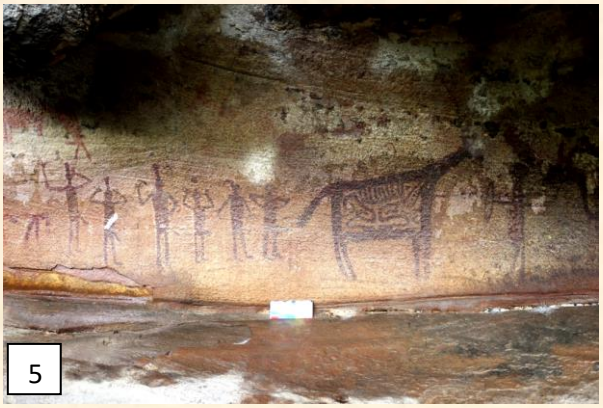

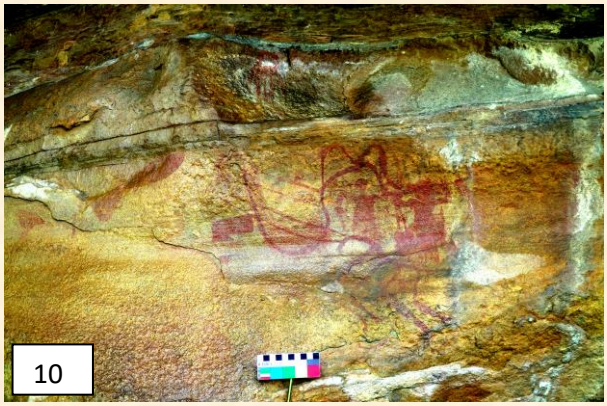

क्रमशः 5. तेनुई, 6. ताला, 7. कौड़िहार, 8. घुरहूपुर नई पहाड़ी, 9. धन्नीपुर, 10. भटवारा खुर्द, 11. दुल्हई देई, 12. जीवाश्म (?)

नृजातीय-पुरातात्त्विक अध्ययन

14–22 सितम्बर, 2022

शैलकला अध्ययन के साथ ही यह कला प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक किस प्रकार से जीवंत रूप में स्थानीय ग्रामीण अंचल में विभिन्न जनजातियों एवं आदिम समूहों में व्याप्त है इसका भी नृजातीय अध्ययन किया गया। अध्ययन के दौरान शैलकला पुरास्थलों के आस–पास के क्षेत्रों (मंगरौर, बनभीखमपुर, ताला, तेनुई, कौड़िहार) में निवसित कुछ जनजातियों जैसे– संवरी वनवासी, मुसहर, मल्लाह, गोंड़ आदि के रहन–सहन, आवास प्रकार, पशुपालन पद्धति, अनाज भण्डारण पद्धति, चूल्हा प्रकार, उपकरण इत्यादि के साथ ही घरों के भित्तियों पर बने चित्रों, खपरैल पर अलंकरण, गोदना एवं उसके बनाने का क्या मुख्य प्रयोजन है इसका भी अध्ययन किया गया। इन जनजातियों के पूजन पद्धति, लोकगीतों, लोक देवताओं एवं देवस्थानों का भी अभिलेखन किया गया।

1. कच्चा छान्स (छप्पर), 2. गोदना, 3. अनाज भण्डारण (कोठिला), 4. संवरी वनवासी समुदाय (बनभीखमपुर)

मल्लाह समुदाय टोकरी बनाते हुए (मंगरौर)

अध्ययन के दौरान भारत के प्राचीनतम लौह प्रमाण वाला पुरातात्त्विक स्थल मलहर का भी सर्वेक्षण किया गया। पुरास्थल से पुरावशेषों के रूप में पात्रखण्ड, लौह उपकरण, लौह अयस्क, लौह धातुमल, भठ्ठी के अवशेष, झोपड़ियों के अवशेष, मनके एवं लघुपाषाण उपकरण बनाने के कोर आदि का संकलन किया गया जिससे मानव इतिहास के विकास क्रम को प्रमाणों के आधार पर व्याख्यायित किया जा सके।

1. मलहर पुरास्थल, 2. पात्र व अन्य पुरावशेष, 3. लौह उपकरण, लौह अयस्क व धातुमल, 4. भठ्ठी का अवशेष व धातुमल

जागरूकता कार्यक्रम

23 सितम्बर, 2022

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र का आदि दृश्य विभाग निरंतर प्रयासरत है कि पूर्वजों की इस अप्रतिम धरोहर को वर्तमान पीढ़ी के समक्ष उसके वास्तविक सन्दर्भ में व्याख्यायित कर सके ताकि भविष्य की आने वाली संततियों के लिए इन शैलचित्रों को उनके मूल स्थान पर ही संरक्षित किया जा सके। इस उद्देश्य से परियोजना के तहत अंतिम दिन 23 सितम्बर, 2022 को घुरहूपुर शैलकला पुरास्थल के समीप एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन तीनों संस्थाओं के सहयोग से किया गया। यह पुरास्थल बौद्ध केंद्र के रूप प्रसिद्ध है जो संभवतः प्राचीन व्यापारिक मार्ग का प्रमुख केंद्र रहा है जिसका प्रमाण यहाँ से प्राप्त कुषाण कालीन अभिलेख से भी होता है जिसमें **'श्रेणिक'** वर्ग के बारे में उल्लेख है। स्थानीय निवासियों के अनुसार यहाँ श्रीलंका, जापान आदि देशों से भी लोगों का आगमन होता था किन्तु वर्तमान में इस पुरास्थल के चित्रों पर स्थानीय लोगों द्वारा पानी आदि डालते रहने के कारण यह लगभग समाप्त से हो गए हैं जिसको वैज्ञानिक तकनीक से संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में चकिया क्षेत्र के उप–जिलाधिकारी श्री ज्वाला प्रसाद सम्मिलित हुए। विशिष्ट अतिथि डॉ0 अभिजीत दीक्षित (असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, इं0 गाँ0 रा0 क0 के0, वाराणसी), परियोजना टीम के समस्त सदस्य, स्थानीय जन–प्रतिनिधि, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, छात्र एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणों की सहभागिता रही।

उप–जिलाधिकारी महोदय ने स्थानीय लोगों को सम्बोधित करते हुए पूर्वजों द्वारा बनाये गए इन चित्रों को बचाने के लिए प्रयास करने को कहा। साथ ही, आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र से इन शैल पुरास्थलों, मुख्यतः घुरहूपुर के शैलचित्रों को संरक्षित करने हेतु निवेदन किया।

जागरूकता कार्यक्रम में सम्मिलित गणमान्य सदस्य, टीम सदस्य एवं स्थानीय ग्रामीण व छात्र

चित्रकला प्रदर्शनी

चित्रकला से जुड़े अभ्यार्थियों, शोधार्थियों को इन धरोहरों से जोड़ने के लिए केंद्र द्वारा इस सम्पूर्ण परियोजना के दौरान दृश्य कला (फाइन आर्ट) के दो छात्र श्री निखिलेश प्रजापति एवं श्री गौतम विश्वकर्मा को टीम के साथ जोड़ा जिन्होंने विभिन्न शैलाश्रयों में रूककर शैलचित्रों को कैनवास पर बनाया। परिणामतः विभाग को 14 पेंटिंग्स प्राप्त हुई जिनमें से की कुछ पेंटिंग का प्रदर्शन भी जागरूकता कार्यक्रम के दौरान किया गया।

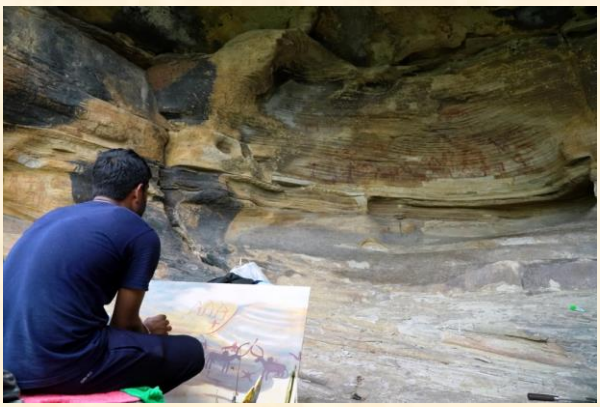

1. चित्रकारी करते हुए क्रमशः श्री निखिलेश, 2. श्री गौतम एवं 3. पेंटिंग्स

पुस्तक लेखन व वृत्तचित्र

परियोजना के तहत किये गए सर्वेक्षण एवं अभिलेखन के आधार पर चंदौली जनपद की शैलकला पर हिंदी भाषा में लगभग 140–150 पृष्ठों की पुस्तक वर्तमान सत्र में ही प्रकाशित किया जाएगा, जिसका विमोचन 3 अप्रैल, 2023 को आदि दृश्य विभाग के स्थापना दिवस पर होगा। इसके साथ ही चंदौली जिले के शैलकला पर एक वृत्तचित्र का भी विमोचन किया जायेगा।

सर्वेक्षण व अभिलेखन के आधार पर
चंदौली जनपद में भविष्य में संभावित अध्ययन एवं कार्यक्रम

चंदौली जनपद के शैलचित्रों के अभिलेखन एवं प्राथमिक रूप से अध्ययन के पश्चात् टीम द्वारा यह अनुभव किया गया कि इस जनपद एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों में भविष्य में अनेक प्रकार के कार्यों को करने की संभावना रहेगी–

पुरातात्त्विक सर्वेक्षण

क्षेत्र में विस्तृत रूप से सर्वेक्षण की आवश्यकता है जिसमें उत्तर प्रदेश एवं बिहार की सीमावर्ती पहाड़ियों में अधिकांश शैलचित्र पुरास्थल प्राप्त होंगे जो प्रागैतिहासिक कालीन मानव अधिवास के घनत्त्व को समझाने में मदद करेंगे। इसके साथ ही सर्वेक्षण में अधिकांशतः नव–पाषाण कालीन शैलचित्र प्राप्त हुए हैं जो इस क्षेत्र में नव–पाषाण कालीन जमाव वाले पुरास्थलों की संभावना पर भी जोर देते हैं, इसका भी पुरातात्त्विक सर्वेक्षण किया जायेगा।

पुरातात्त्विक उत्खनन

अनेक शैलाश्रयों में मानवीय आवास से सम्बंधित जमाव भी प्राप्त हुए है जैसे– रतनपुर, घुरहूपुर आदि पुरास्थलों पर पुरातात्त्विक उत्खनन किया जाना चाहिए जिससे समकालीन अनेक पुरातात्त्विक प्रमाण प्राप्त होंगे जो शैलचित्रों को व्याख्यायित करने में वैज्ञानिक रूप से सहयोग करेगा जैसे कालक्रम, जीव–जंतु, मानवीय स्वरूप आदि।

अध्ययन क्षेत्र के भूगार्भिक संरचना का अध्ययन

यद्यपि कैमूर की पहाड़ियों का भूगार्भिक अध्ययन पर विस्तृत रूप से अध्ययन हुआ है किन्तु पुरातात्त्विक दृष्टि से मानवीय संस्कृति के विकास में इस क्षेत्र के भूगार्भिक संरचना व पर्यावरण का क्या महत्त्व रहा है इसका भी विस्तृत रूप से अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र से प्री–कैम्ब्रियन कालीन जीवाश्म की प्राप्ति इस क्षेत्र से प्रथम बार कौड़िहार पुरास्थल से हुई है, इस दृष्टि से भी अध्ययन का विषय है।

संरक्षण एवं पर्यावरणीय-पर्यटन स्थल

सर्वेक्षण व अभिलेखन के पश्चात् कुछ ऐसे पुरास्थल प्रकाश में आए हैं जिनका संरक्षण किया जाना अतिआवश्यक है जिसमें घुरहूपुर पुरास्थल की बौद्ध चित्र एवं अभिलेख महत्त्वपूर्ण है। यह पुरास्थल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केंद्र के रूप में एवं पर्यावरणीय पर्यटन स्थल के रूप में

विकसित हो सकता है। साथ ही, स्थानीय लोगों की आर्थिक जीविकोपार्जन को बढ़ाने के लिए नए अवसर प्रदान कर सकता है।

1. घुरहूपुर के चित्र का वर्तमान स्थिति, 2. डी–स्ट्रेच तकनीक के प्रयोग के पश्चात

चित्रकला प्रदर्शनी

अभिलेखन के दौरान चित्रकारों द्वारा बनाई गई 14 पेंटिंग्स को चंदौली जनपद में स्थानीय रूप से अलग–अलग स्थानों पर प्रदर्शनी के रूप में आयोजित कर सकते हैं जिससे लोगों को उनकी धरोहर के प्रति जागरूक किया जा सके।

प्रेस खबर

12 सितम्बर, 2022

शैलकला पर अध्ययनके लिए आज होगा समझौते पर हस्ताक्षर

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नयी दिल्ली एवं डीएवी पीजी कालेज के बीच शैलकला अध्ययन के लिए एक समझौते पर १२ सितम्बर को हस्ताक्षर किया जायेगा। चंदौली जिले में शैलकला अध्ययन एवं उनके अभिलेखन के लिए यह समझौता किया जायेगा जिसमे बसंत महिला महाविद्यालय, (राजघाट) भी सम्मिलित होगा। इस अवसर पर डीएवी पीजी कालेज में चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच.सोनवाने, (एम.एस. विश्वविद्यालयए बड़ोदरा, गुजरात)एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र,(नयी दिल्ली) के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डाक्टर रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डाक्टर सत्यदेव सिंह करेंगे। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डाक्टर मुकेश कुमार सिंह एवं परियोजना अधिकारी डाक्टर ओम प्रकाश कुमार ने दी है।

विश्वकर्मा भी समारोह में मौजूद थे।

शैलकला पर अध्ययन के लिए आज होगा समझौते पर हस्ताक्षर

वाराणसी। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली एवं डीएवी पीजी कॉलेज के मध्य शैलकला अध्ययन के लिए एक समझौता पर आज हस्ताक्षर किया जाएगा। चंदौली जिले में शैलकला अध्ययन एवं उनके अभिलेखन के लिए यह समझौता किया जाएगा जिसमे बसंत महिला महाविद्यालय राजघाट भी सम्मिलित होगा। इस अवसर पर आज 12 सितम्बर को डीएवी पीजी कॉलेज में ''चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास'' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वीएच सोनवाने, एमएस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह करेंगे। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह एवं परियोजना अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश कुमार ने दी है।

शैलकला पर अध्ययन के लिए आज होगा समझौते पर हस्ताक्षर

वाराणसी, । इँदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली एवं डीएवी पीजी कॉलेज के मध्य शैलकला अध्ययन के लिए एक समझौता पर आज हस्ताक्षर किया जाएगा। चंदौली जिले में शैलकला अध्ययन एवं उनके अभिलेखन के लिए यह समझौता किया जाएगा जिसमे बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट भी सम्मिलित होगा। इस अवसर पर आज 12 सितम्बर को डीएवी पीजी कॉलेज में %%चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास%% विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच सोनवाने, एम एस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात एवं इँदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह करेंगे। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह एवं परियोजना अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश कुमार ने दी है।

धौरहरा रोड किनारे सूखे जर्जर पेड़ की डाल गिरनें से 12 वर्षीय बालक गम्भीर रुप से घायल

चौबेपुर (वाराणसी) क्षेत्र के धौरहरा मार्ग सड़क किनारे लगे सूखे पेड़ जो काफी जर्जर हालात में है, रविवार की साम पांच बजे के आस-पास अचानक तेज हवा के साथ बारिश की चपेट में आनें से, लकी उम्र 12 वर्ष पिता पप्पू राजभर निवासी परानापुर जो चौबेपुर से साईकिल से अपनें घर कादीपुर जा रहा था कि अचानक सूखा पेड़ साईकिल पर गिर पड़ा, जिससे बच्चे लकी को काफी चोट आ गई सथानीय लोगों नें दौड़कर लकी को उठाते हुये निजी हास्पिटल में उपचार के लिये भेज दिया। वहीं सायकिल भी क्षतिग्रस्त हो गई। बताते चले की चौबेपुर से धौरहरा मार्ग पर ऐसे कई सूखे और जर्जर सड़े हुये पेड़ हैं, जो राहगीरों के लिये मौत का सबब बनें हुये हैं। जो कभी कोई बड़ी घटना घटित हो सकती है। वहीं वन विभाग नींद से सोया हुआ है। बड़ी घटना का शायद वन विभाग को इंतजार है। चौबेपुर चौराहे से धौरहरा रोड जाते समय एक पेड़ तो कादीपुर स्टेशन के रेलवे क्रासिंग से पहले ही है। और दो पेड़ कादीपुर रेलवे क्रासिंग के पार, चौराहे से पहले लबे रोड पर सूखा पेड़ जर्जर हालत में खड़ा है। आखिर इसे कब काटा जायेगा। वहीं स्थानीय लोगों में किसन कुमार, नीरज कुमार, विजय बरनवाल, डाक्टर प्रदीप सिंह यादव, जितेन्द्र मौर्या, मुलायम मौर्या, रामू गोड़, छबू गोड़,मंगला मौर्या, हदीश बाबू परानापुर आदि लोगों नें वन विभाग से निवेदन करते हुये रोड किनारे पड़े सूखे जर्जर पेड़ को जल्द से जल्द कटवानें की मांग की है। यदि वन विभाग समय रहते यदि नहीं चेता तो कभी भी कोई बड़ी घटना हो सकती है।

शैलकला पर अध्ययन को एमओयू करेगा डीएवी

वाराणसी। चंदौली में शैलकला अध्ययन और अभिलेखन को लेकर डीएवी कॉलेज ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ एक समझौता करेगा। समझौते में बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट भी शामिल है। इसी कड़ी में सोमवार को महाविद्यालय में 'चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजित है। जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद और शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनवाने, एमएस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभागाध्यक्ष डॉ. रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह करेंगे। इसी दौरान समझौते पर हस्ताक्षर भी होगा। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश सिंह और परियोजना अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश कुमार ने दी है।

13 सितम्बर, 2022

डीएवी में होगा शैलकला का अध्ययन

वाराणसी (एसएनबी)। चंदौली जिले में शैलकला (रॉक आर्ट) के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कॉलेज एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के मध्य सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। एमओयू पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने

डीएवी पीजी कॉलेज और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता

शैलकला के सर्वेक्षण के पर हुए समझौते पर हस्ताक्षर के बाद प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह, डॉ. रमाकर पंत, अजीत कुमार सिंह यादव सहित अन्य विशिष्टजन। फोटो : एसएनबी

हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओ का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा। इसमें डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के अलावा बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के मंत्री/प्रबंधक अजीत कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।वहीं इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की आवश्यकता है।

दुनिया भर में तीन देश रॉक आर्ट के लिए प्रसिद्ध हैं उनमें आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत तीसरे नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है। भारत मे मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त ही दिखलाई पड़ रहे है। डॉ. रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमे शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया।

संचालन डॉ. ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ. दिलीप संत, प्रो. प्रशांत कश्यप, डॉ. मिश्रीलाल, डॉ. पारुल जैन, डॉ. दीपक शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में छात्र - छात्राएं उपस्थित रहे।

शैलकलाओं के अध्ययन के लिए डीएवी और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता

वाराणसी, । । चंदौली जिले में शैलकला रॉक आर्ट के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कॉलेज एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के मध्य सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। एमओयू पर महाविद्यालय के प्राचार्य

डॉ. सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओ का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा। इसमें डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के अलावा बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के मंत्री/प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव, बड़ोदरा, गुजरात से आये प्रख्यात पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच सोनावने एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।वहीं इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की आवश्यकता है। दुनिया भर में तीन देश रॉक आर्ट के लिए प्रसिद्ध है उनमें आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत तीसरे नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश की कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है। भारत मे मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त ही दिखलाई पड़ रहे है। डॉ. रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमे शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया। संचालन डॉ. ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. प्रशांत कश्यप, डॉ. मिश्रीलाल, डॉ. पारुल जैन, डॉ. दीपक शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में छात्र - छात्राएं उपस्थित रहे।

शैलकलाओं के लिए करार

समझौते पर हस्ताक्षर के दौरान डीएवी कालेज के प्राचार्य डा. सत्यदेव सिंह व अन्य • जागरण

- डीएवी पीजी कालेज व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के बीच समझौता
- 14 सितंबर से चंदौली के विभिन्न स्थानों पर होगा सर्वेक्षण व अभिलेखन

जागरण संवाददाता, वाराणसी : चंदौली जिले में शैलकला (राक आर्ट) के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कालेज व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (नई दिल्ली) के बीच सोमवार एक समझौता हुआ है। एमओयू पर प्राचार्य डा. सत्यदेव सिंह व केंद्र के आदि कला विभाग के अध्यक्ष डा. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी 14 से 23 सितंबर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओ का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा।

बसंत महिला महाविद्यालय के फील्ड समन्वयक भी होंगे शामिल : इसमें डीएवी, बसंत महिला महाविद्यालय (राजघाट) व इंदिरा कला केंद्र के अलावा के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय डीएवी के मंत्री/प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव, बड़ोदरा, गुजरात के प्रख्यात पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डा. मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मेडिकल हेल

गया है। दस दिसंबर को सत्र 2019-

चंदौली की शैल कलाओं पर अध्ययन करेंगे डीएवी के छात्र

वाराणसी। डीएवी पीजी कॉलेज व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली के बीच सोमवार को चंदौली की शैल कला के अध्ययन के लेकर एमओयू हुआ। समझौते के तहत डीएवी के शिक्षकों के साथ छात्र-छात्राएं चंदौली जिले के विभिन्न शैल कलाओं का सर्वेक्षण कर उनके बारे में अध्ययन करेंगे। समझौते पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए।14 से 23 सितंबर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर पाए जाने वाले शैल कलाओं का क्षेत्रीय सर्वेक्षण और अभिलेखन किया जाएगा। इसमें वसंत महिला महाविद्यालय फील्ड समन्वयक के रूप में सहयोग करेगा। ब्यूरो

शैलकला के अध्ययन के लिए डीएवी और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता

चंदौली जिले में शैलकला (रॉक आट)के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कॉलेज एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, (नई दिल्ली) के मध्य सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया। एमओयू पर महाविद्यालय के प्राचार्य डाक्टर सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉक्टर रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी १४ सितम्बर से २३ सितम्बर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओ का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा। इसमें डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्रए नई दिल्ली के अलावा बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के मंत्रीध्प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव, बड़ोदरा, (गुजरात) से आये प्रख्यात पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच सोनावने एवं

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉक्टर मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वहीं इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की आवश्यकता है। दुनिया भर में तीन देश रॉक आर्ट के लिए प्रसिद्ध है उनमें आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत तीसरे नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य की पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश के कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है। भारत मे मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त ही दिखलाई पड़ रहे है। डाक्टर रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमे शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉक्टर मुकेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया। संचालन डॉक्टर ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रोफेसर प्रशांत कश्यप, डॉक्टर मिश्रीलाल, डॉक्टर पारुल जैन, डॉक्टर दीपक शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

अमर उजाला (वाराणसी)

चंदौली की शैलकलाओं पर अध्ययन करेंगे छात्र

समझौता

- डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता
- रॉक आर्ट के विभिन्न पहलुओं पर मिलेंगी नई जानकारियां

वाराणसी, वरिष्ठ संवाददाता। चंदौली जिले में शैलकला (रॉक आर्ट) पर डीएवी पीजी कॉलेज के छात्र और शिक्षक विशेषज्ञों के साथ अध्ययन करेंगे। इस सहमति पत्र पर सोमवार को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। रॉक आर्ट का सर्वेक्षण और अभिलेखन कार्य 14 से 23 सितंबर तक चलेगा।

सर्वेक्षण में डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ बसंत महिला महाविद्यालय राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव,

शैलकला पर संयुक्त अध्ययन के लिए सोमवार को हुए एमओयू को दिखाते डीएवी पीजी कॉलेज प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत। ● हिन्दुस्तान

बड़ोदरा गुजरात से आए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान हुई कार्यशाला में पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है। इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की आवश्यकता है। दुनिया भर में रॉक आर्ट के लिए आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत का नंबर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश की कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है।

भारत मे मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त दिखलाई पड़ रहे है। डॉ. रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमे शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह ने किया। संचालन डॉ. ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. प्रशांत कश्यप, डॉ. मिश्रीलाल, डॉ. पारुल जैन, डॉ. दीपक शर्मा सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान (वाराणसी)

DAV PG College, IGNCA sign MoU

PIONEER NEWS SERVICE ■ VARANASI

A Memorandum of Understanding (MoU) was signed between DAV PG College and Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi here on Monday for the special study of rock art in Chandauli district. The MoU was signed by Dr Satyadev Singh, Principal of the college and Dr Ramakar Pant of IGNCA.

Under this agreement, field survey and recording of rock art will be done at different places of Chandauli district from September 14 to 23 by the joint team comprising the experts of DAV PG College and IGNCA along with the field coordinators of the Vasanta College for Women, Rajghat (Varanasi). At the time of signing the MoU, the college's secretary and manager Ajit Kumar Singh Yadav, eminent archaeologist and rock art expert Prof VH Sonawane from Vadodara, Gujarat and Dr Mukesh Kumar Singh, Head of the Department of Ancient Indian History, Culture and Archeology were also present.

DAV PG College and IGNCA exchanging an MoU for study on rock art in Varanasi on Monday. Pioneer

While addressing the workshop organised on this occasion, archaeologist and rock art expert Prof VH Sonawane said that the rock art is now in the era of erosion, hence there is a need for its conservation and recording. Three countries around the world are famous for rock art, India comes third after Australia and Africa. He said that apart from Kerala, Ladakh, Gujarat, Assam, Manipur, there is abundance of rock art on Vindhya hills of Madhya Pradesh and Kaimur hills of Uttar Pradesh. In the rock art found in India, abundance is visible only for the propagation of Buddhism. Dr Ramakar Pant said that if we want to understand every aspect of human civilization, then we have to study rock art deeply.

Earlier, the guests were welcomed by the head of the department, Dr Mukesh Kumar Singh by presenting bouquets, mementos and angavastram. Dr Omprakash Kumar conducted the proceedings while the vote of thanks was proposed by Dr Manisha Singh.

The workshop was also attended by Prof Prashant Kashyap, Dr Mishrilal, Dr Parul Jain, Dr Deepak Sharma and a good number of students.

पाइनियर (वाराणसी)

14 सितम्बर, 2022

जनसंदेश (वाराणसी)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व वसन्त महिला महाविद्यालय से समझौता

एमओयू दिखाते मुख्य अतिथि डॉ. रमाशंकर, डॉ. राजीव जायसवाल व महाविद्यालय की प्रचार्या प्रो. अलका सिंह।

वाराणसी (एसएनबी)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली और वसन्त महिला महाविद्यालय के मध्य मंगलवार को एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इस अवसर पर 'चंदौली जिला की शैलकला का अध्ययन और अभिलेखन' पर आधारित परियोजना का भी आरंभ हुआ जिसके क्षेत्रीय अनुसंधाता पुराविद् डॉक्टर राजीव जायसवाल के साथ डॉक्टर ओमप्रकाश होंगे। इस समारोह में विशिष्ट व्याख्यान प्रसिद्ध पुराविद् एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर वीएच सोनावने, एमएस विश्वविद्यालय वड़ोदरा ने देते हुए विश्व में भारतीय शैलकला की प्राचीनता एवं क्षेत्रानुसार उनकी विविधताओं एवं उसमें निहित तत्त्वों से परिचय करवाते हुए उसके समुचित एवं गूढ़ अध्ययन पर बल दिया ।

मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डाक्टर रमाकर पन्त ने इस अवसर पर शैलकलाओं द्वारा भारतीय बौद्धिक सम्पदा, प्राचीनता एवं तत्संबंधी विषयों का संकेत करते हुए इनके अभिलेखीकरण की आवश्यकता को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर सम्वेदना सिंह ने किया। अतिथियों का स्वागत प्राचार्या प्रोफ़ेसर अलका सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर राजीव कुमार जायसवाल ने किया । इस अवसर पर शोध अधिकारी डॉक्टर दिलीप संत, प्रोफ़ेसर शीला सिंह, प्रोफ़ेसर रंजना सेठ, प्रोफेसर सीमा श्रीवास्तव, प्रो संजीव कुमार, प्रो अंजना सिंह, प्रो वंदना झा, डॉक्टर सुशीला भारती, डॉक्टर ओमप्रकाश, डॉक्टर निरांजना श्रीवास्तव, डॉक्टर स्वतंत्र कुमार सिंह समेत एक सौ अस्सी से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान (वाराणसी)

शैलकलाओं पर शोध करेंगे विशेषज्ञ

वसंता कॉलेज

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान प्राचार्या प्रो. अलका सिंह, डॉ. राजीव जयसवाल एवं डॉ. रमाकर पंत।

वाराणसी, वरिष्ठ संवाददाता। राजघाट स्थित वसंत महिला महाविद्यालय के विशेषज्ञ चंदौली की शैलकलाओं (रॉक आर्ट) पर अध्ययन करेंगे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली और महाविद्यालय के बीच मंगलवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। महाविद्यालय की तरफ से पुराविद् डॉ. राजीव जायसवाल और डॉ. ओमप्रकाश क्षेत्रीय अनुसंधानकर्ता होंगे।

समझौते के दौरान पुराविद् एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने, एमएस विश्वविद्यालय वड़ोदरा का विशिष्ट व्याख्यान हुआ। उन्होंने विश्व में भारतीय शैलकला की प्राचीनता, क्षेत्रानुसार उनकी विविधताओं एवं उसमें निहित तत्वों का जिक्र किया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला के आदि दृश्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने शैलकलाओं द्वारा भारतीय बौद्धिक सम्पदा, प्राचीनता के अभिलेखीकरण की आवश्यकता बताई। संचालन डॉ संवेदना सिंह व स्वागत प्राचार्या प्रो. अलका सिंह ने किया।

जनवार्ता (वाराणसी)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और बीकेएम में एमओयू

मंगलवार को परियोजना के लिए समझौता करते प्रतिनिधि।

वाराणसी (जनवार्ता)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली और वसन्त महिला महाविद्यालय के मध्य मंगलवार को एमओयू पर हस्ताक्षर हुए एवं इस अवसर पर 'चंदौली जिला की शैलकला का अध्ययन और अभिलेखन' पर आधारित परियोजना का भी आरंभ हुआ जिसके क्षेत्रीय अनुसंधाता पुराविद् डा राजीव जायसवाल के साथ डॉ ओमप्रकाश होंगे । इस समारोह में विशिष्ट व्याख्यान प्रसिद्ध पुराविद् एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वी एच सोनावने, एमएस विवि, वड़ोदरा ने देते हुए विश्व में भारतीय शैलकला की प्राचीनता एवं क्षेत्रानुसार उनकी विविधताओं एवं उसमें निहित तत्त्वों से परिचय करवाते हुए उसके समुचित एवं गूढ़ अध्ययन पर बल दिया । मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डाक्टर रमाकर पन्त ने इस अवसर पर शैलकलाओं द्वारा भारतीय बौद्धिक सम्पदा, प्राचीनता एवं तत्संबंधी विषयों का संकेत करते हुए इनके अभिलेखीकरण की आवश्यकता को रेखांकित किया। संचालन डॉक्टर सम्वेदना सिंह, स्वागत प्राचार्या प्रो. अलका सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर राजीव कुमार जायसवाल ने किया ।

राकलैण्ड न्यूरो एण्ड मदर चाइल्ड हेल्थ सेंटर

डॉ. संदीप राय
MBBS. M.S. Mch– न्यूरो सर्जन
सुविधाएँ: कमर दर्द, गर्दन दर्द, सिर दर्द, ट्यूमर, स्लिपडिस्क, रीढ़ की हड्डी का समस्या, हेड इन्जरी

डॉ. श्वेता राय
MBBS. M.S.- सभी प्रकार प्रसूति एवं बाँझपन का विशेषज्ञ
सुविधाएँ: गर्भ एवं योनि रोग, बाँझपन का इलाज, नसबंदी एवं परिवार नियोजन, गर्भाशय का कैंसर

समय 10 AM -12 PM | 4 PM - 8 PM

दुर्गाजी सिंचि द्वारा बच्चेदानी को मुक्त का इलाज

मैं राजेन्द्रे नगर, (बड़ोमी होटल के पीछे) सिगरा-मंडुवाडीह रोड, वाराणसी 9721148871, 0542-2221381

शैलकला अध्ययन के लिए हुआ समझौता

जासं, वाराणसी: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली और बीएचयू का वसंत महिला महाविद्यालय मिलकर भारतीय शैल कला पर शोध करेंगे। मंगलवार को दोनों संस्थानों के मध्य समझौता हुआ। इस अवसर पर 'चंदौली जिला की शैलकला का अध्ययन और अभिलेखन' पर आधारित परियोजना का भी शुभारंभ हुआ जिसके क्षेत्रीय अनुसंधाता पुराविद् डा. राजीव जायसवाल के साथ डा. ओमप्रकाश होंगे।

मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. रमाकर पंत ने शैल कलाओं द्वारा भारतीय बौद्धिक संपदा, प्राचीनता एवं तत्संबंधी विषयों के अभिलेखीकरण की आवश्यकता को रेखांकित किया। प्रसिद्ध पुराविद् एवं शैलकला विशेषज्ञ एमएस विश्वविद्यालय वडोदरा के प्रो. वीएच सोनावने ने विश्व में भारतीय शैल कला की प्राचीनता से परिचय करवाया।

दैनिक जागरण (वाराणसी)

अमर उजाला (वाराणसी)

वसंत महिला में होगी शैलकला की पढ़ाई

महाविद्यालय का इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ हुआ समझौता

संवाद न्यूज एजेंसी

एमओयू दिखातीं प्राचार्य अलका। संवाद

वाराणसी। वसंत महिला महाविद्यालय में छात्राएं अब चंदौली जिले की शैलकला (रॉक आर्ट) का अध्ययन कर सकेंगी।

मंगलवार को महाविद्यालय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किया। डॉ. राजीव जायसवाल को क्षेत्रीय अनुसंधाता पुराविद् बनाया गया है। वडोदरा के एमएस विश्वविद्यालय के शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने ने विश्व में भारतीय शैलकला की प्राचीनता, क्षेत्रानुसार विविधताओं और तत्वों से परिचय कराया।

केंद्र के डॉ. रमाकर पंत ने बतौर मुख्य अतिथि अपने विचार रखे। कार्यक्रम में डॉ. संवेदना सिंह, प्राचार्या प्रो. अलका सिंह, डॉ. राजीव कुमार जायसवाल, शोध अधिकारी डॉ. दिलीप संत, प्रो. शीला सिंह, प्रो. रंजना सेठ, प्रो. सीमा श्रीवास्तव, प्रो. संजीव कुमार, प्रो. अंजना सिंह, प्रो. वंदना झा, डॉ. सुशीला भारती, डॉ. ओमप्रकाश, डॉ. निरांजना श्रीवास्तव मौजूद थे।

डी डी न्यूज (वाराणसी)

16 सितम्बर, 2022

अमर उजाला (चन्दौली)

कैनवास पर उकेरे गए शैलचित्र

इलिया के घुरहूपुर में पहाड़ी पर बने शैलचित्र को कैनवास पर उकेरने वाले कलाकार। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

पीडीडीयू नगर। चंदौली के जंगलों में बने हजारों वर्ष पुराने शैलचित्र अब वर्षों तक संरक्षित और सुरक्षित रहेंगे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली से आए कलाकारों की टीम इसे कैनवास पर उतार रही रही है। करीब एक सप्ताह से काम कर रहे कलाकारों ने कई शैलचित्रों को कैनवास पर उतारा है।

चंदौली के चकिया विकासखंड के घुरहूपुर गांव में पहाड़ की

गुफाओं में बने ऐतिहासिक शैलचित्रों को संजोने में जुटे कलाकार

गुफाओं में शैलचित्र बने हैं। कहीं बुद्ध तो कहीं उस समय के देवी देवताओं के शैलचित्र यह बता रहे हैं कि कभी यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध रहा है। शैलचित्रों के साथ हजारों वर्ष विरासत और इतिहास को संरक्षित और सुरक्षित करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के शैलकला विभाग, डीएवी महाविद्यालय और बसंत महिला महाविद्यालय की ओर से जिले के शैलचित्रों पर अध्यनन और अभिलेखन का कार्य किया जा रहा है। टीम का उद्देश्य इन चित्रों को संरक्षित करना है। टीम ने 14 सितंबर से शैल चित्रों के अध्ययन का कार्य शुरू किया है।

इस टीम में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पन्त, डॉ. दिलीप कुमार संत, डॉ. प्रवीण, डीएवी कालेज से डॉ. ओम प्रकाश, बंसत महिला महाविद्यालय से डॉ. राजीव जायसवाल, भूगर्भ विज्ञान, बीएचयू के प्रो. यूके शुक्ला शामिल हैं। इसके अलावा चित्रकार निखिलेश प्रजापति और गौतम विश्वकर्मा भी इन चित्रों अनुकृति बना रहे हैं।

टीम के सदस्यों ने बताया कि शुक्रवार को दोपहर तीन बजे से सैदुपुर के ग्राम घुरहूपुर में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसके मुख्य अतिथि एसडीएम चकिया ज्वाला प्रसाद होंगे। इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को इसके लिए जागरूक किया जाएगा।

24 सितम्बर, 2022

अमर उजाला (चन्दौली)

पुरातत्व

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के वाराणसी केंद्र के असिस्टेंट प्रो. डॉ. अभिजीत ने दी जानकारी

व्यापारिक मार्ग और बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था घुरहूपुर

संवाद न्यूज एजेंसी

पीडीडीयू नगर। चंदौली जिले का चकिया और खासकर घुरहूपुर का क्षेत्र कभी बौध धर्म और प्राचीन व्यापारिक मार्ग का महत्वपूर्ण केंद्र रहा होगा। यहां मिले हजारों वर्ष पुरानी शैलचित्रों के आधार पर यह बात इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के वाराणसी केंद्र के असिस्टेंट प्रो. डॉ. अभिजीत ने कही।

वहीं पुराविद् डॉ. राजीव जायसवाल ने जिले के विभिन्न पुरास्थलों जैसे मल्हर, घुरहुपुर, कौड़िहार, लतीफशाह आदि के आधार पर कैमूर क्षेत्र को प्रागैतिहासिक काल से ही मानव अधिवास के लिए उपयुक्त बताया।

चंदौली के घुरहूपुर में शिल्पचित्रों के प्रति लोगों को जागरूक करते विद्वान। संवाद

विशेषज्ञों ने गांव में गोष्ठी कर लोगों को जागरूक भी किया।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की संस्था इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य शैलकला विभाग, डीएवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय और वसंत महिला महाविद्यालय, वाराणसी के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति व पुरातत्त्व विभाग के संयुक्त तत्त्वाधान में चंदौली जनपद के शैल चित्रों पर अध्ययन, अभिलेखन के लिए एक

कलाकारों ने कैनवास पर उतारे हजारों वर्ष पुराने शैलचित्र

परियोजना पर कार्य किया जा रहा है इसके तहत कलाकार हजारों वर्ष पुरानी शैलचित्रों को कैनवास पर संजो रहे हैं।

इस कार्य में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पन्त, अनुसन्धान अधिकारी डॉ. दिलीप कुमार संत, प्रोजेक्ट एसोसिएट डॉ. प्रवीण सीके और डीएवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के डॉ. ओम प्रकाश, वसंत महिला महाविद्यालय के डॉ. राजीव जायसवाल, भूगर्भ विज्ञान, बीएचयू के प्रो.यू. के. शुक्ला शामिल हैं। टीम में चित्रकार सदस्य के रूप में निखिलेश प्रजापति और गौतम विश्वकर्मा हैं।

विशेषज्ञों की टीम की ओर से शुक्रवार को सैदुपुर के ग्राम घुरहूपुर में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें स्थानीय ग्रामीण, जनप्रतिनिधि, छात्र आदि सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चकिया तहसील के उप-जिलाधिकारी शज्वाला प्रसाद रहे। उप-जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को घुरहुपुर के शैलचित्रों के महत्त्व के विषय में बताया साथ ही टीम के द्वारा इस प्रकार के कार्य के लिए धन्यवाद दिया।